विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

यह कैसा लोकतंत्र?

"भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है", यह वाक्य हम विश्व के लगभग सभी मंचों पर भारतीय नेताओं से सुनते रहते हैं। इसके कारण हम भारतीय, गौरव का अनुभव भी करते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात, देश की जनता ने इसे सही सिद्ध भी किया है। उदाहरणार्थ, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1975 में देश में आपातकाल लागू किया तो एक बार ऐसा लगा कि शायद देश में लोकतंत्र सदैव के लिए विदा हो गया है, किंतु मार्च 1977 में हुए चुनावों ने यह सिद्ध किया कि लोकतंत्र न केवल जीवित है अपितु सुदृढ भी है। जनता ने इसका परिचय सर्व शक्तिशाली इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को हराकर, नव गठित जनता पार्टी को भारी बहुमत से जिता कर दिया।

इसके पश्चात समय-समय पर कई ऐसी घटनाएं हुई जो लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत थीं, जिससे यह लगा कि भारत में वास्तविक लोकतंत्र को खतरा उत्पन्न हो रहा है। सत्तर के दशक में निर्वाचित विधायकों ने हरियाणा में जिस तेजी से बार-बार दल बदले, उसे 'आया राम, गया राम' का नाम दिया गया। इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए 1985 में दलबदल विरोधी कानून बनाया गया। इसके अंतर्गत यह प्रावधान किया गया कि कोई भी निर्वाचित सदस्य दल बदलने पर अपनी सदस्यता खो देगा। यदि किसी विधायक दल के एक तिहाई सदस्यों के एक साथ दल बदलने पर उसकी सदस्यता बनी रहती थी। इससे भी जब दल बदल की प्रवृत्ति पर प्रभावी अंकुश नहीं लगा तो बाद में इसमें संशोधन कर एक तिहाई की अनिवार्यता को बढ़ाकर दो तिहाई कर दिया गया। यह लिखने की आवश्यकता नहीं है कि दल बदल किसी वैचारिक आधार पर नहीं होकर केवल मात्र पद और धन के लोभ में ही होता है।

गत सप्ताह जो घटनाक्रम महाराष्ट्र में चला, उसने तो एक बार पुनः भारतीय लोकतंत्र को उपहास का पात्र बना दिया है। ऐसा कहने का आधार क्या है यह निम्न विवेचन से स्पष्ट हो जाएगा।

2019 के विधानसभा चुनाव में महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना का चुनाव पूर्ण समझौता था। उन्होंने आपस में सीटों का बंटवारा किया था ।इन दोनों दलों को मिलाकर बहुमत से कहीं अधिक सीटें प्राप्त हुईं। जनादेश स्पष्ट रूप से भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना के गठबंधन को मिला था। चुनाव के परिणाम आने के बाद मुख्यमंत्री पद की महत्वाकांक्षा के कारण बहुत खींचतान चली। भाजपा देवेन्द्र फड़नवीस को मुख्यमंत्री बनाना चाहती थी, जबकि शिवसेना उद्धव ठाकरे को। शिवसेना का कहना था कि ऐसा आश्वासन भाजपा द्वारा उन्हें दिया गया था।

जब भाजपा ने उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री बनाने से इन्कार कर दिया, तो उसने राष्ट्रवादी काँग्रेस के अजीत पवार को उपमुख्यमंत्री पद का प्रलोभन देकर, देवेन्द्र फड़नवीस को मुख्यमंत्री पद की शपथ सुबह होने से पहले ही राजभवन में दिलवा दी। ऐसी न ही चलनी थी और न ही चल पाई। यह तीन दिन में ही गिर गई और उद्धव ठाकरे ने राष्ट्रवादी काँग्रेस और कॉग्रोस के साथ मिलकर महा विकास संगठन बनाकर सरकार बना ली।

फलस्वरुप, शिवसेना ने भाजपा से अलग होने का निर्णय किया और कांग्रेस तथा राष्ट्रवादी कांग्रेस के साथ मिलकर महा विकास अघाडी गठबंधन बनाया। यह सर्वविदित है के भाजपा और शिवसेना का गठबंधन कई वर्षों से महाराष्ट्र में बना हुआ था उन्होंने साथ ही कई चुनाव लड़कर विजय भी प्राप्त की थी। जनता ने भी इसी गठबंधन के पक्ष में जनादेश दिया था जिसे बदलते हुए एक अवसरवादी राजनीति का परिचय देते हुए महा विकास आघाडी का गठबंधन हुआ और महाराष्ट्र में सरकार बनी। निश्चित रूप से, महाराष्ट्र के मतदाताओं ने स्वयं को ठगा हुआ महसूस किया होगा।

कहा जाता है, इतिहास अपने आप को दोहराता है। यही कहावत महाराष्ट्र के मामले में सटीक बैठती है जो काम शिवसेना ने भाजपा के साथ किया था, वही काम अब भाजपा, शिवसेना के साथ कर रही है।

शिवसेना के नंबर दो के नेता एकनाथ शिंदे ने लगभग 40 शिवसेना विधायकों के साथ उद्धव ठाकरे के विरुद्ध विद्रोह करते हुए अलग गुट बना लिया। एक नाथ शिंदे गत 8 दिन से मीडिया में चर्चा का केंद्र बने हुए हैं। पहले ये विधायक सूरत के एक पांच सितारा होटल में ठहरे और गत 7 दिन से गुवाहाटी के पांच सितारा होटल में ठहरे हुए हैं। इनकी एक एक गतिविधि पर मीडिया द्वारा ऐसी नजर रखी जा रही है और 24 घण्टे इनसे संबंधित समाचारों को ऐसे प्रसारित किया जा रहा है जैसे देश में इसके अलावा कोई खबर है ही नहीं।

विधायकों को अपनी प्रतिबद्धता बदलने का अवसर दल बदल कानून की कमियों के कारण मिलता है। फिलहाल यह मामला कानूनी दांवपेच में फंसा हुआ है, एक दृष्टिकोण यह है के दो तिहाई से अधिक अलग हुए विधायक तभी अयोग्यता से बच सकते हैं जब वह किसी दल में विलय हो जाएं।

लोकतंत्र, "जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा" किए गए शासन का नाम है, किंतु नेतागण, जिस प्रकार चुने जाने के बाद, अपनी राजनीति प्रतिबद्धता गिरगिट से भी तेज गति से बदलते हैं, उसे देखकर तो ऐसा लगता है कि लोकतंत्र केवल नाम के लिए है। अब उनका उद्देश्य केवल मात्र एक है, येन-केन-प्रकारेण सत्ता में बने रहना अथवा सत्ता प्राप्त करना। फिर चाहे, इसके लिए उसे जनता के साथ विश्वासघात ही क्यों न करना पड़े।

विधायकों को अपनी प्रतिबद्धता बदलने का अवसर दल बदल कानून की कमियों के कारण मिलता है। फिलहाल यह मामला कानूनी दांवपेच में फंसा हुआ है, एक दृष्टिकोण यह है के दो तिहाई से अधिक अलग हुए विधायक तभी अयोग्यता से बच सकते हैं जब वह किसी दल में विलय हो जाएं। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले विधायकों ने अभी तक ऐसा कोई निर्णय नहीं लिया है। इसी कारण इनमें से 16 विधायकों को दल से निष्कासित करने का निर्णय शिवसेना ने लिया है। इस आधार पर विधानसभा के उपाध्यक्ष ने इन विधायकों को अयोग्य घोषित करने हेतु नोटिस दिया है। इस नोटिस को एकनाथ शिंदे के गुट द्वारा उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गई है। कानूनी रूप से तो इसका निर्णय उच्चतम न्यायालय कर देगा किंतु कुछ प्रश्न इसके बाद भी अनुत्तिरत ही रहेंगे।

पहला, विधायकों को पांच या सात सितारा होटलों में बंधक करके रखने की क्या आवश्यकता है? क्या उनके विधायक कोई वस्तु हैं, जिन्हें कोई बोली लगाकर खरीद कर ले जाएगा? विधायकों एवं दलों के आचरण से तो कुछ-कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है कि उन्होंने स्वयं को एक प्रकार से मंडी में खड़ा कर रखा है कि कोई भी आए और अधिकतम दाम लगाकर उन्हें ले जाए। क्या राजनीतिक दलों को अपने विधायकों पर बिल्कुल विश्वास नहीं है जो उन्हें बड़े-बड़े होटलों में बंदी बनाकर रखा गया है। कुछ-कुछ इसी प्रकार का घटनाक्रम हमने राजस्थान में भी देखा था, जब सचिन पायलट ने कुछ समर्थक विधायकों के साथ मिलकर कांग्रेस सरकार को एक प्रकार से अस्थिर कर दिया था। उस समय भी, कई दिनों तक कांग्रेस विधायक एक बड़े पांच सितारा होटल में कई दिनों तक रहे थे। अब यही क्रम महाराष्ट्र के विधायकों द्वारा दोहराया जा रहा है।

दूसरा, विधायकों को आलीशान होटलों में कई दिनों तक ठहराने का खर्चा कौन उठा रहा है? क्या इसे विधायकों को प्रलोभन देना मानकर, निर्वाचन आयोग इसका संज्ञान नहीं ले सकता?

तीसरा, असमंजस की इस पूरी अवधि में जन हित के विभिन्न कार्य लंबित रहने से जनता को जो परेशानी हुई, उसका जिम्मेदार कौन है? इस अवधि में राज्य की शासन व्यवस्था ठहर सी जाती है क्योंकि कोई भी नीतिगत निर्णय मंत्रियों द्वारा नहीं लिए जाते हैं। उनका पूरा ध्यान केवल अपने विधायकों को पक्ष में बनाए रखने पर रहता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में, शिवसेना के संजय रावत का यह बयान निंदनीय है कि गुवाहाटी से एकनाथ शिंदे के साथ वाले विधायकों की लाशें मुंबई आएंगी। उन्होंने यह भी कहा कि लाखों शिव सैनिक केवल उनके इशारे की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वह किसी भी स्थिति तक जा सकते हैं। इसी उकसाने का ही परिणाम है कि महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर उग्र प्रदर्शन हुए जिनमे आगजनी और तोड़फोड़ की घटनाएँ हुईं। दोनों पक्षों के बयानों का स्तर बहुत नीचे चला गया है। इस पूरी आपाधापी में, लोक कल्याण एवं जनता द्वारा अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों में व्यक्त किए गए विश्वास का कहीं कोई नामों निशान नहीं दिखाई देता है।

होना तो यह चाहिए कि दल बदल कानून पर एक बार इन अनुभवों के आधार पर पुनर्विचार किया जाए एवं ऐसी व्यवस्था की जाए कि किसी व्यक्ति के उस दल के अनुशासन के बाहर जाने पर उस व्यक्ति की सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जाए। इसमें किसी प्रकार का अपवाद नहीं रखा जाय। यदि वह दल छोड़ना चाहे तो उसे दोबारा जनता द्वारा चुनकर आना होगा। जब सदस्यों की सदस्यता समाप्त होगी, तो कोई भी निर्वाचित प्रतिनिधि विधायक दलबदल करने से पहले सौ बार सोचेगा। हाँ, किसी विषय पर गुण-अवगुण के आधार अपने दल से अलग विचार रखने पर उसे दल बदल नहीं माना जाय। इससे सदनों में सदस्य गण दल के गुलामों की तरह व्यवहार करने को बाध्य नहीं होंगे। इस हेतु आवश्यक संशोधन कानून में किया जा सकता है।

जनप्रतिनिधियों की इस विकृत मानसिकता का एक प्रमुख कारण यह भी है कि उनके लिए में आने का उद्देश्य जनता की सेवा नहीं अपितु स्वयं के लिए अकूत धन की व्यवस्था करना है ताकि पीढ़ियों तक का इन्तेजाम हो जाय।

अधिकांश जनप्रतिनिधियों के पास आय का कोई साधन न होने पर भी उनकी संपत्ति में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि कैसे हुई है, इसकी जांच करना असंभव नहीं है, किंतु सामान्यतय ऐसा होता दिखाई नहीं देता। जब कभी होता भी है तो उसका उद्देश्य केवल राजनीतिक विरोधियों को प्रताड़ित या भयभीत कर अपने पक्ष में करने का होता है। हाल ही में ई डी, इनकम टैक्स और सीबीआई द्वारा की गई विभिन्न कार्यवाही से तो ऐसा ही प्रतीत होता है। आंकड़े बताते हैं कि इन एजेंसियों द्वारा गत सालों में की गई कार्रवाई में सफलता अंततः केवल 1 प्रतिशत से भी कम में मिली है।

विभिन्न राज्यों में विभिन्न राजनैतिक दलों के कार्य और व्यवहार को देखकर आम नागरिक के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है – 'यह कैसा लोकतन्त्र?'

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

वयः संधि और हिंसाः वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता है

मानव जीवन में वय की गति के अनुसार बड़े वैयक्तिक परिवर्तन आते हैं। वयः संधि को हम शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था में बांट सकते हैं।

उम्र की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करने के बीच वाले वर्षों को वयःसंधि कहते हैं और ये चंद वर्ष हर व्यक्ति के जीवन में बड़ा परिवर्तन लाने में सक्षम होते हैं क्योंकि विभिन्न हार्मोन्स के प्रभाव से व्यक्तित्व में बहुत संभावित बदलाव होते हैं। इतिहास को देखा जाए तो समाज के कालजयी मार्गदर्शकों ने बौद्धिकता की तरफ जाने के मार्ग भी बताए हैं पर व्यवहार में देखें तो हजारों खिठा पैदा कर चुकी है नस्ल आदम की है सब तस्लीम लेकिन आदमी फिर भी भटकता है।

(खिज़्र = पथप्रदर्शक।
तस्लीम = स्वीकार)

पर बहुत सारे छद्म पथप्रदर्शक जीवन को भ्रष्ट भी करते हैं। आजकल चारों तरफ जो अर्थहीन उत्तेजना का माहौल बना हुआ है उसके पीछे कितने ही व्यक्तिगत स्वार्थ में लिप्त जनहित का चोगा पहने लोगों का ही तो हाथ है। दिशाहीनजन उत्तेजना सूखे जंगल में फैली आग जैसी होती है। वैश्विक स्तर के अध्ययन बताते हैं कि अपने कार्य स्थल पर मध्य वय के लोग ज्यादा हिंसा करते हैं। सामाजिक और राजनीतिक विष वमन भी ये लोग ही अधिक करते हैं। स्कूल में हिंसा किशोरावस्था के आखिरी और युवावस्था के प्रारंभिक समय में ज्यादा की जाती है। यही समूह आत्म हत्याओं में भी अग्रणी होता है। बाहरी हिंसा ही आंतरिक हिंसा की जननी होती है।

अमेरिका के अखबार वॉशिंगटन पोस्ट के अनुसार निर्दोष जन समूह पर गोलियों की बरसात करने वालों में 98 प्रतिशत पुरुष होते हैं जिनमें से 40 प्रतिशत 18 से 29 वर्ष के होते हैं और बाकी 30 प्रतिशत 30 से 45 वर्ष के पाए गए हैं। इनमें से अधिकतर अवसादठास्त और अकेलेपन के शिकार होते हैं और उनको समाज या राष्ट्र में अपना कोई स्थान नजर नहीं आता था इसलिए वे अपने हिसाब से दुनिया को समाप्त करने निकल पड़े थे।

मनोवैज्ञानिक पीटर लंगमन के अनुसार क्षत हुआ पुरुषत्व, असहाय होने का अहसास, शासकीय पक्षपात की अवधारणा आदि मुख्य कारण हैं जिनकी वजह से कोई व्यक्ति अनजान और निर्दोषों की हत्या करता है। इसके अलावा जिन पुरुषों के जीवन में स्त्री का साथ नहीं होता है वे इस कारण अक्सर हिंसक हो जाते हैं। कुछ लोग महज प्रसिद्धि पाने के लिए भी हत्याएं करते हैं। कभी कभी फैंटेसी की दुनियां में पहुंचे लोग भी हत्यारे हो सकते हैं या फिर व्यापक स्तर पर हिंसा फैला सकते हैं। हिंसा के द्वारा वे इतिहास में स्थान बनाना चाहते हैं। पर इतिहास तो साधारणतम लोगों को याद करता है जैसे कबीर, रहीम, सूरदास, रैदास, बाल्मीकि, चोखामेला, नामदेव आदि। बाकी ऐतिहासिक पात्रों की याद समय

डॉ. रामावतार शर्मा

समय पर जब तक सूरज चांद रहेगा टाइप नारे लगा कर दिलवाई जाती है।

सामाजिक सामंजस्य और संपर्क का अभाव, किन्ही बाहरी या अंदरूनी कारणों से बेचैनी, भविष्य का अंधकारमय होना आदि भी किसी व्यक्ति को हिंसक बनने का कारण बन सकते हैं। इसके अलावा हर हिंसक हत्यारे के पीछे तकरीबन सौ ऐसे लोग होते है जो किसी की हत्या करने की सोचते तो जरूर हैं पर उनका विवेक उन्हें ऐसा करने से रोक लेता है। पर बदलते माहौल में इन सौ में से कितने लोग हिंसा को अपनाएंगे यह एक विचारणीय विषय होना चाहिए। याद रखा जाय कि हिंसा को रोकना ही एक मात्र उपाय है। प्रतिहिंसा तो हिंसा को उर्वरक प्रदान करती है।

लोग अल्पकालीन उद्देश्य पूर्ति के लिए हिंसा का सहारा लेकर आगे बढ़ जाते हैं और पीछे रह जाती हैं तबाहियों की निशानियां जैसा कि कवि दुष्यंत ने कहा था :–

तुम क्या जानो इस आंधी में, कई घरौंदे टूट गए इन असफल निर्मितियों के शव, कल पहचाने जायेंगे।

हिंसा को नियंत्रित करने में हमें विज्ञान का सहारा लेना चाहिए। अमेरिका के मनोरोग विशेषज्ञ डॉक्टर जोनाथन मेट्जे का मानना है कि हमें विकसित होते मानव मन का और अधिक अध्ययन करना चाहिए। एक अति महत्वपूर्ण अध्ययन में पता चला है कि हमारे मस्तिष्क का एक भाग होता है जिसे प्री फ्रंटल लोब कहा जाता है। यह हिस्सा निर्णय लेने और उसके परिणामों के बारे में विश्लेषण करता है। इस भाग को पूर्ण विकसित होने में पच्चीस वर्ष लगते हैं यानि पच्चीस साल तक किसी मनुष्य को सामान्य परिस्थितियों में न तो हथियार देना चाहिए, ना विवाह करना चाहिए, न कार और मोटरसाइकिल देनी चाहिए और ना ही वोट देने का अधिकार। उपरोक्त विषयों का गहन प्रशिक्षण तो दिया जा सकता है पर अधिकार पच्चीस साल की उम्र में ही मिलना चाहिए। देखा गया है कि सड़क दुर्घटनाओं में ज्यादातर वाहन चालक युवक ही होते हैं जिन्हे बिना किसी प्रशिक्षण के 18 से 20 वर्ष की उम्र में ड्राइविंग लाइसेंस मिल गया होता है। ध्यान रहे कि कड़े अनुशासन के बावजूद सेना भी अपने सैनिकों को शांति काल में हथियार नहीं रखने देती है।

हालांकि पच्चीस वर्ष की उम्र के बाद वाहन चलाने के अधिकार या मतदान आदि की बात पर बहुमत विरोध जताता नजर आएगा पर सड़कों पर लहराती मोटरसाइकिल, तीव्र गति से दौड़ती कारें, एक तरफा होते मतदान, वैवाहिक हिंसा आदि देखने पर उपरोक्त बातें सार्थक लगेंगी। चीन तथा पश्चिमी और खाड़ी पार के देशों में वाहन चालन का अधिकार जीवन की एक उपलब्धि है, भारत की तरह रिश्वत बटोरने का जरिया नहीं। मानव बम ज्यादातर बालक या युवक होते हैं। हिंसक लोग छोटे बच्चों को केंद्र में रख कर ही पूरी धरती को अशांत करने में लगे रहते हैं। गीली मिट्टी ही मनचाहे रूप में डाली जा सकती है। हर देश का शासक अक्सर बच्चों को संबोधित और बाल अभिमान को पोषित करता है ताकि भविष्य में अनुपालकों की संख्या में वृद्धि हो सके।

अमेरिका के हत्या कांडों के शोधकर्ता जिलियन पीटरसन और जेम्स डेंसले ने अपनी पूरी उम्र स्कूलों में होने वाली हिंसा के अध्ययन को समर्पित की है। उनके निष्कर्ष के आधार पर तरूणावस्था और युवावस्था की वयःसंधि और फिर कुछ युवावस्था का आखिरी दौर एक व्यक्ति का बड़ा महत्वपूर्ण समय होता है। समाज और सरकार यह व्यवस्था स्थापित करे कि जीवन के पहले पच्चीस साल तक शिक्षा का आधार स्वविवेक विकास होना चाहिए वरना यहां बिखरी हुई लाशें, वहां कुछ हैं मकां टूटे किन्ही की किस्मतें फूटी, कई सपने हुए झूठे।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

देश के जज़्बातों की पहली किरण : अयोध्या

देश में पिछले लगभग 1000-1200 वर्षों में जो हो रहा था, इन दिनों इसके ठीक विपरीत अयोध्या में जो चल रहा है, वह ऐतिहासिक है, एक नये भारत की शुरूवात है। अयोध्या में श्री राम का मंदिर निर्माण एक सामान्य मंदिर निर्माण की घटना नहीं है। एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है। इसमें इतिहास को पलटने की गुंज है। सोया हुआ सनातन आज चैतन्य है, जागृत है। वो वक्त कुछ अलग था, यह वक्त कुछ अलग है।

इतिहास गवाह है पिछले बारह सौ वर्षों में भारत पर ज्यादातर समय मुगल शासकों ने राज किया। जिनका धन दौलत की लूटपाट एवं जबरन धर्म परिवर्तन के साथ-साथ मंदिरों को ध्वस्त करके, वहीं पर मस्जिद बनाना उनका मुख्य एजेण्डा होता था। परिणामस्वरूप देश में मंदिर ध्वस्त होते गये, मस्जिदें बनती गयी। मुगल शासकों का कारवां तोड़-फोड़ और धर्म परिवर्तन की पटरी पर आगे बढ़ता गया। हिन्दू संस्कृति एवं आस्था के केन्द्र मुगल शासकों की ज्यादती के शिकार होते गये। अंग्रेजों के राज में मंदिरों का ध्वस्त होना जरूर बन्द हो गया था। परन्तु अपने ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार में पूरे लगे हुए रहे। बाहुबल के स्थान पर धनबल के आधार पर धर्म परिवर्तन का कार्य करते रहे और आज भी कर रहे है। देश का पूर्वांचल एवं जनजाति क्षेत्र इसके जीवन्त उदाहरण है। आजादी के बाद भी ईसाई मशीनरीज़ विद्यालयों के माध्यम से देश की भावी पीढ़ी को राष्ट्रीयता और राष्ट्र-प्रेम से शून्य बनाने का काम षड़यंत्र पूर्वक परन्तु सम्मानित तरीके से कर रही है।

हमारा मानना है कि कायदे से तो 1947 में धर्म के आधार पर पाकिस्तान के निर्माण के साथ ही भारत के समस्त मंदिर, मस्जिदों से मुक्त हो जाने चाहिये थे। किसी संसद एवं न्यायालय की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिये थी। परन्तु धर्म निरपेक्षता के चोले एवं अल्पसंख्यक मतदाताओं की संख्या ने देश को अशान्ति की भट्टी में झोंक दिया।

हिन्दु बहुसंख्या के आधार पर हिन्दुस्तान बनने पर हिन्दुओं को एक राहत जरूर मिली कि मंदिरों की तोड़-फोड़ बन्द हो गयी। परन्तु दुखद पक्ष यह रहा कि देश में 70 वर्षों की आजादी के

डॉ. कैलाश सोडाणी

बाद भी एक भी ध्वस्त मंदिर के पुर्ननिर्माण का कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के पश्चात् अयोध्या में मंदिर निर्माण के प्रथम अध्याय का शुभारम्भ हुआ। इसलिए यह सामान्य नहीं, एक ऐतिहासिक एवं गौरवशाली शुभारम्भ है। इस सम्बन्ध में दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि मंदिरों को ध्वस्त कर के मस्जिद निर्माण का निर्णय तत्कालीन राजाओं ने किया। किसी न्यायालय का निर्णय नहीं था।

आजादी के अमृत महोत्सव तक की यात्रा पूर्ण करने तक भी इस प्रकार का निर्णय करने की ताकत आज के राजा के पास नहीं है। राजनीति विज्ञान की पुस्तकों में पढ़ाया जाता है कि तलवार की नोक के बल पर बने बादशाहों से तो प्रजातांत्रिक व्यवस्था से निर्वाचित बादशाह ज्यादा ताकतवर होता है। धरातल पर इस स्थिति का देश को इन्तजार है।

अनुभव साक्षी है कि न्यायालयों के भरोसे तो मंदिरों के पुर्ननिर्माण का कार्य सैकड़ों वर्षो तक भी सम्भव नहीं है। इस तकलीफ का कारण यह है कि देश के माननीय न्यायाधीश प्रायः कानून की किताब पढ़ने के बजाय सुबह का अखबार पढ़ कर निर्णय लिखवातें है। सर्वोच्च न्यायालय को इसलिए अयोध्या में राममंदिर निर्माण के निर्णय में इतना समय लग गया। आज निर्णय होना और अब तक नहीं होना कारण स्पष्ट है। मैं अभी हाल ही में अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के प्रबन्ध मण्डल की बैठक में भाग लेने गया, उस समय अयोध्या का भी अवसर मिला। रामलला के दर्शन लाभ के साथ-साथ यह जानकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हुआ कि मंदिर की भव्यता के अनुरूप ही पूरी अयोध्या नगरी को आकर्षक बनाने का काम बड़े जोर-शोर से चल रहा है। रेलवे स्टेशन एवं एयरपोर्ट को सैकड़ों करोड़ रूपये के बजट से अत्याधुनिक बनाये जा रहे है। सरयू नदी के किनारों को अहमदाबाद के साबरमती के रिवर फ्रन्ट की भाँति आकर्षक बनाया जा रहा है। भारतीय संस्कृति, इतिहास, आयुर्वेद, योगा आदि पर शोध हेतु वैदिक विश्वविद्यालय खड़ा किया जा रहा है।

कुल मिलाकर विज़न यह है कि भव्य राम मंदिर के साथ-साथ अयोध्या को देश और दुनियाँ में एक श्रेष्ठ एवं आधुनिक धार्मिक तथा पर्यटन नगरी के रूप में स्थापित किया जावें। अयोध्या के कायाकल्प से पूरे शहर में हर्ष और उल्लास का वातावरण है। नगरवासियों के चहरे के भावों से ऐसा लगता है जैसे एक लम्बे वनवास के पश्चात् साक्षात भगवान श्री राम पुनः अयोध्या पधार रहे है।

–डॉ. कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलपति,
महर्षि दयानन्द सरस्वती
विश्वविद्यालय, अजमेर

आबकारी-पुलिस विभाग की लापरवाही से पुरातत्व स्थल शराबियों का अड्डा बना

चौरु/उनियारा, (निसं)। उपखंड क्षेत्र का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हाथी भाटा आबकारी-पुलिस विभाग की मेहरबानी से सुरा प्रेमियों का अड्डा बना हुआ है। जिसके चलते हुए सुरा प्रेमी खुलेआम पर्यटन स्थल पर शराब का सेवन कर मौज कर रहे हैं। वहीं पुलिस प्रशासन एवं आबकारी विभाग की कथित अनदेखी एवं उदासीनता के कारण यहा पर सुरा प्रेमियों की मौज हो गई है तथा हाथी भाटा की प्रतिमा के पास ही शराबियों द्वारा खुलेआम शराब की पार्टियां की जा रही है। जिसके कारण पर्यटकों के सामने गंभीर समस्याओं का अंबार लगा हुआ है।

स्थल के मुख्य गेट से महज सौ फीट की दूरी पर ही शराब की दुकान संचालित।

आश्चर्य जनक बात तो यह है कि हाथी भाटा स्थल के मुख्य गेट से महज लगभग एक सौ फिट की दूरी पर ही आबकारी विभाग के अधिकारियों की मेहरबानी से शराब की दुकान संचालित है। सुरा प्रेमी शराब की दुकान से शराब लेते है और मजे से पर्यटक स्थल पर बैठकर शराब की पार्टियां खुल्लेआम करते हैं ।जिन्हें रोकने टोकने वाला कोई नहीं है। पुलिस प्रशासन भी इनके खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय हाथ पर हाथ धरे मूकदर्शक बना हुआ है। इससे पर्यटक स्थल पर आने वाले लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कई बार पर्यटक स्थल पर घूमने के लिए आने वाले पर्यटक शराबियों के पार्टियों को देखकर गेट के पास से ही बाहर वापस चले जाते हैं। यह बड़ी दुविधा एवं विडंबना है कि जिले का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल आज शराबियों का अड्डा बन गया है और पर्यटकों को बढ़ावा देने के दावे करने वालों पर भी आज सवालियां निशान उठते नजर आ रहे हैं। फिर भी जिम्मेदार मौन साधे हुए हैं?

साइकिल से 26 दिन में 2500 किमी. का सफर तय कर घर लौटा विनीत

झुंझुनूं, (निसं)। झुंझुनूं के एक युवा ने 26 दिनों में 2500 किलोमीटर की साइकिल यात्रा करके करीब पांच राज्यों के विद्यार्थियों को खेलों में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने का संदेश दिया है। सोमवार सुबह यह युवा झुंझुनूं पहुंचा तो उसका स्वागत किया गया। दरअसल इंडाली गांव का रहने वाला विनीत भालोठिया ओडिसा के भूवनेश्वर की नाइजर कॉलेज में रिसर्च स्कॉलर है। साइकलिंग करना उसका शौक है।

इस बार उसने इस शौक को संदेश में बदलने के लिए तय किया कि वह अपने घर, यानि कि झुंझुनूं साइकिल से जाएगा। इसके बाद उसने एक जून को अपनी साइकिल यात्रा शुरू की। जो पांच राज्यों भूवनेश्वर, झारखंड, बिहार, यूपी और राजस्थान होते हुए आज संपन्न हुई। विनीत का झुंझुनूं पहुंचने पर छात्र नेता पंकज गुर्जर के नेतृत्व में स्वर्ण जयंती स्टेडियम में स्वागत किया गया। इस मौके पर विनीत ने बताया कि वर्तमान माहौल में खेलों को शिक्षा की बजाय कम महत्वत्ता मिल रही है। इसलिए उसने शिक्षा के साथ-साथ खेलों को महत्व मिले। इसी संदेश के साथ यह यात्रा एक जून को शुरू कर 27 जून को

विनीत के घर पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया।

पूरी की है। विनीत ने बताया कि इस दौरान ना केवल राह चलते लोगों से वह मिला और खेलों की महत्वत्ता बताई। बल्कि आईआईटी भूवनेश्वर, पटना, बीएचयू, कानपुर और धनबाद में भी पढ ने वाले युवाओं से रूबरू होकर उन्हें जाना कि वे सबसे अलग क्यों होते है और उनमें खेलों को लेकर क्या रूझान है। जो काफी अच्छा रहा।

ढाबों पर काम करते मिले बच्चेः- विनीत ने बताया कि अब वे अगली राइड चाइल्ड लेबर को रोकने के लिए करेंगे। 2500 किलोमीटर की इस यात्रा के दौरान उसने कई ढ ाबों में बच्चों को काम करते देखा और उनसे बातचीत भी की। लगभग सभी बच्चों ने पढ ने की इच्छा जाहिर की। लेकिन किसी ना किसी मजबूरीवश वे पढ ने की उम्र में प्लेट साफ करते हुए मिले।

मौसम ने नहीं दिया साथः- विनीत ने बताया कि मौसम ने दूसरे ही दिन अपना रंग दिखाया और साथ नहीं दिया। वह भूवनेश्वर से निकलकर भदरक ओडिसा ही पहुंचा था कि तेज बारिश आने लगी। लेकिन विनीत ने रोज 100 किमी. की राइडिंग जारी रखी।

राशिफल

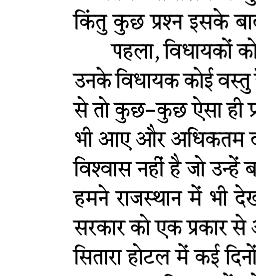

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 28 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, मृगशिरा नक्षत्र सांय 7:05 तक, गंड योग प्रातः 7:47 तक, शकुनि करण प्रातः 5:53 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग सांय 7:05 से सूर्योदय तक है। आज चतुरदशी में वृद्धि हुई हैं। आज पितृकार्य अमावस्या है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:05 से 10:47 तक, लाभ-अमृत 10:47 से 2:13 तक। शुभ 3:53 से 5:37 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:20

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

तुला
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी।

वृश्चिक
शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। शुभ कार्यों को टालना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सफल रहेंगे। नवीन कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

कुंभ
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।